43 वर्ष | पंचम अंक | दिसम्बर 2020

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

506 वाँ सफलतम अंक

इस अंक में...

9 ज्ञान का सदुपयोग करें
11 राष्ट्रीय घटनाक्रम
17 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
27 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
31 नवीनतम सामान्य ज्ञान
39 राज्य समाचार
41 खेलकूद
44 रोजगार समाचार
46 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
49 सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा : एक उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए तैयार रहें
52 युवा प्रतिभाएं

फोकस

59 (1) राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन की सार्थकता
61 (2) ग्रामीण भारत को सम्बल प्रदान करने वाली मुख्य योजनाएं

विविधा

65 स्मरणीय तथ्य
67 विश्व परिदृश्य
71 ऐतिहासिक स्थल एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व
74 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं

लेख

77 **आर्थिक पारिस्थितिकी लेख**—हरित अर्थव्यवस्था : स्वस्थ पर्यावरण के साथ विकास
79 **सामाजिक-आर्थिक लेख**—(i) भारतीय रेलवे में निजी कम्पनियों की भागीदारी : आवश्यकता व चुनौतियाँ
80 (ii) स्वामित्व योजना
81 **ऐतिहासिक लेख**—क्रान्तिकारियों का तीर्थ : सेल्यूलर जेल
82 **सामरिक लेख**—जोजिला सुरंग : एशिया का सबसे लम्बा सुरंग मार्ग
83 **शैक्षिक लेख**—(i) शिक्षा के विकास में तकनीकी के प्रयोग एवं ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका
85 (ii) विद्यालयी शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक—2019
87 **स्वास्थ्य-रक्षा लेख**—चिकित्सालयों के घातक संक्रमण
89 **निजीकरण लेख**—लोक निजी भागीदारी
91 **सैन्य लेख**—सैन्य मोर्चे पर भारत और चीन
93 **पर्यावरण लेख**—पारिस्थितिक संतुलन में बाघ की अनिवार्यता
94 **जल-संकट लेख**—नदी जल बँटवारे का खतरा उत्तरी राज्यों के लिए एक उग्र मुद्दा
96 **कृषि लेख**—स्वस्थ पादप से ही मिलेगा सुरक्षित भोजन
99 **वार्षिक रिपोर्ट 2019-20**—भारत के रक्षा क्षेत्र की प्रगति और उपलब्धियाँ
101 सार संग्रह

हल प्रश्न-पत्र

104 (i) सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, 2020
116 (ii) उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (प्रा.) परीक्षा, 2020
130 (iii) बिहार बी.एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा, 2020
137 (iv) आगामी 66वीं बी.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

ऐच्छिक विषय

151 **तर्कशक्ति**—आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित पी.ओ./एम.टी. (प्रा.) परीक्षा, 2019
154 **संख्यात्मक अभियोग्यता**—केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल/दिल्ली पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2019

वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

161 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
164 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता

ज्ञानार्जन के नवीन क्षितिज

166 बिहार : महत्वपूर्ण तथ्य
169 क्या आप जानते हैं ?
170 अपना ज्ञान बढ़ाइए

श्रेष्ठतर प्रतिभागी

171 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—अहंकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है
173 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—495 का परिणाम
174 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक 199
176 प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित लेख (विषयवार)

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

ज्ञान का सदुपयोग करें।

–साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''विवेक के बिना ज्ञान सदैव विनाशकारी है''
–बायरॉन एबेल

प्राचीनकाल से भारतीय ऋषि मुनियों के पास अनेक योग विद्याएं रहीं, उपलब्धियाँ रहीं. चमत्कारिक अवस्थाओं को प्रकट करने की शक्तियाँ रहीं, किन्तु फिर भी अनेकानेक ऋषियों ने कभी इनके प्रदर्शन की तरफ ध्यान नहीं दिया, बल्कि सतत् आत्म ज्ञान और आत्म प्रकाश फैलाने की ओर ही प्रवृत्त हुए. ज्ञान सतत् साधना से प्राप्त होता है. ज्ञान का उपयोग किस प्रकार किया जाय. यह व्यक्ति के स्वयं के विवेक पर निर्भर करता है, योग साधनाओं के लिए अकृष्ट मनोबल हो भी तो तन्त्र कठिनाइयों को झेल कर अनेक सिद्धियों के स्वामी बन जाना ही श्रेयस्कर है. व्यक्ति का कोई हित नहीं है. आत्म कल्याण का प्रयोजन तो किसी और ही तरह से पूरा होता है. उसके लिए व्यक्ति को अपने अन्तःकरण को शुद्ध बनाना पड़ता है. सद्गुण असन्मार्गगामी साधनाएं करनी पड़ती हैं. विद्यार्थियों के लिए भी यही उचित है. एक कश्मीरी वृतान्त के अनुसार मगध सम्राट घनानन्द के शासन काल में वर रुचि (जिसे बाद में कात्यायन के नाम से जाना गया), इन्द्रदत्त और व्याडी ऋषि वर्ष के शिष्य थे. गुरु के बार-बार मना करने के बावजूद इन तीनों शिष्यों ने ऋषि से तन्त्र-मन्त्र योग तथा पदार्थ विद्या सिखाने का ही आग्रह किया. महर्षि ने सोचा ये विद्या लुप्त न हो. लोग आध्यात्मिक शक्तियों को भौतिक शक्ति से बढ़कर स्वीकार करते रहें और आवश्यक हो, तो विश्व कल्याण में तन्त्र का उपयोग भी होता रहे इस दृष्टि से उन्होंने इन शिष्यों की बात मान ही ली. उन्हें अनेक ऐसे आसन, प्राणायाम, हठयोग की क्रियाएं सिखायीं, जिससे उनमें अनेक सिद्धियों का प्रादुर्भाव होता चला गया, परन्तु कल्याण प्रवेश से लेकर सूक्ष्म लोगों में अभिलोभन तक दूरदृष्टि स्रवण से लेकर औरों के मन की बात जान लेने तक की सारी विद्याएं उन्होंने इन शिष्यों को सिखाकर उनको निष्णात योगी बना दिया. अब व्याडी और इन्द्रदत्त दोनों तन्त्र-मन्त्र, यन्त्र के काफी जानकार बन गए. साधनाएं समाप्त हुईं. घर चलने का समय हुआ, तो महर्षि वर्ष के दोनों ही शिष्यों–व्याडी और इन्द्रदत्त ने अपने गुरु को गुरुदक्षिणा के रूप में कोई भी भौतिक वस्तु स्वीकार करने का आग्रह किया. व्याडी बोला गुरुदेव आपको गुरु दक्षिणा क्या दें ? इन्द्रदत्त ने भी वही आग्रह किया, तो महर्षि वर्ष बोले कि भौतिक सम्पत्तियाँ क्षण भंगुर सुख देती हैं. हमें वह नहीं चाहिए. कोई भी अध्यात्मवादी, जो चाहता है. मेरी भी वही इच्छा है कि तुम यहाँ से जाओ धर्म और ज्ञान का प्रकाश फैलाओ ताकि अपने देश, जाति और संस्कृति के जीवन में कुछ आदर्शों उद्दाप्त भावनाओं सुख और समृद्धि की कमी न रहे और हमें कुछ भी नहीं चाहिए. तुमने जो कुछ भी सीखा है उससे जगत् का कल्याण हो. ये सच है कि गुरु का ज्ञान फैले. बड़ों की बस यही तो भावना होती है और गुरु यही चाहता है कि मानव-मानव परस्पर प्रेम से रहें और विराट उद्देश्यों को सहजता से जीते जाएं, किन्तु दोनों शिष्य गुरु के इन वचनों से सन्तुष्ट नहीं हुए उन्हें अपनी उपलब्धि का अहंकार नचा रहा था. वे दोनों हठ करते रहे कि गुरुदेव कोई भौतिक वस्तु माँगें. शिष्यों के बार-बार आग्रह करने पर महर्षि वर्ष ने कहा दे सकते हो तो एक हजार स्वर्ण मुद्राएं लाकर दे दो, ताकि जर्जर आश्रम के जीर्णोद्धार का प्रबन्ध किया जा सके. ये बात शिष्यों ने स्वीकार कर ली. होना चाहिए था यह कि दोनों परिश्रम करते, उद्योग करते और मेहनत से गुरु दक्षिणा चुकाते, व्याडी और इन्द्रदत्त दोनों ही शिष्य तन्त्र-मन्त्र विद्या सीख लेने के अहंकार में डूबे हुए थे इसलिए उन्होंने गुरुदेव वर्ष को गुरुदक्षिणा के रूप में एक हजार स्वर्ण मुद्राएं अपनी मेहनत से अर्जित न करके तन्त्र-मन्त्र से जुटाने का प्रयास किया. तन्त्र विद्या का उपयोग कर गुरु दक्षिणा अविलम्ब चुका दी जाए. संयोग से जिस दिन वे दोनों यह निर्णय कर रहे थे उसी दिन मगध के सम्राट् घनानन्द की मृत्यु हो गई. दोनों शिष्यों ने वर रुचि के साथ मिलकर एक योजना बनायी कि तन्त्र विद्या को प्रयुक्त करके इन्द्रदत्त सम्राट घनानन्द के मृत शरीर में प्रवेश कर जाए. इस प्रकार सम्राट घनानन्द का मृत शरीर फिर से जीवित हो उठेगा. वह राज सिंहासन पर आरुढ़ होगा. वर रुचि उससे स्वर्ण मुद्राओं की याचना करेगा. इस अवधि में व्याडी इन्द्रदत्त के शव की रखवाली करेगा. योजनानुसार इन्द्रदत्त योग विद्या के द्वारा अपना शरीर त्याग कर सम्राट् घनानन्द के शरीर में प्रवेश कर गया. सम्राट् घनानन्द जीवित हो गया, लेकिन उसमें आत्मा इन्द्रदत्त की थी. वररुचि ने दरबार में जाकर स्वर्ण मुद्राओं की याचना की जिसे सम्राट् ने स्वीकार कर लिया. इस घटना से सारा मगध और राज प्रासाद आश्चर्यचकित था. पुनर्जीवित शरीर तो सम्राट् नन्द का था, लेकिन उसमें आत्मा इन्द्रदत्त की थी इसलिए नन्द की भाव-भंगिमा, आचार-विचार में काफी अन्तर था. इस रहस्य को और कोई तो नहीं जान पाया, किन्तु स्वभाव में भिन्नता के कारण नन्द का अमात्य शकटार (कश्मीरी में शकटाला) सारी स्थिति समझ गया उसने तत्काल पता लगा कर इन्द्रदत्त के शव का दाह संस्कार करा दिया और व्याडी को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया. कोई उपाय न देखकर घनानन्द के शरीर में व्याप्त इन्द्रदत्त उसी शरीर में रह गया और भोग वासनाओं में डूब गया. इन्द्रदत्त अन्ततः घनानन्द के रूप में चन्द्रगुप्त के हाथों मारा गया और व्याडी कारागृह की यातना सहता रहा जो योग विद्या, आत्म कल्याण के उद्देश्य से सिखाई गई थी. अहंकार के कारण वह उसे तथा उसके मित्र को ले डूबी. गुरु दक्षिणा तो दूर रही जब महर्षि वर्ष ने यह समाचार सुना, तो उन्होंने इतना ही कहा कि अपात्र को विद्या देने का यही फल होता है और उन्होंने उस दिन से संकल्प कर लिया कि योग विद्या अब किसी को नहीं सिखाएंगे, केवल आत्म कल्याण का मार्ग ही लोगों को सिखाया जाएगा.

भारत में ये घटनाएं अनेक बार हुई हैं और यही कारण है कि हमेशा शिष्य तो रह जाता है, तो गुरु बहुत सारी योग्यताएं, समताएं और विद्याएं, जो अपने शिष्य में भरना चाहता है. वह नहीं भर पाता है और कदाचित् गुरु उस शिष्य को दे भी देता है, तो अक्सर शिष्य अहंकारवश कुछ-न-कुछ उठा पटक कर डालता है और उसका परिणाम गुरु का ज्ञान लज्जित हो जाता है. ऐसा न हो इसलिए हमें प्रदर्शन और प्रभावना में न उलझ कर के आत्म ज्ञान और ध्यान की साधना और अपने प्रेम को विराट करना यही उद्देश्य होना चाहिए.

गुरु (शिक्षक) के पास ज्ञान का जो अपरिमित भण्डार होता उसे वह अपने शिष्यों में बाँटना चाहता है. गुरु की अभिलाषा यही होती है कि उसके शिष्य जो भी ज्ञान प्राप्त करें उसका सदुपयोग करके अपना तथा अपने परिवार का लालन-पालन करें, समाज और राष्ट्र की भलाई तथा समृद्धि के लिए कार्य करें. प्रत्येक गुरु का यह प्रयास रहता है कि उसके शिष्य काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ का परित्याग करके अच्छे मार्ग पर चलें उनमें अपने ज्ञान और पद के आधार पर अहंकार की भावना व्याप्त न हो. जो शिष्य गुरु के बताए सच्चे मार्ग पर चलते हैं उन्हें सफलता अवश्य मिलती है, जो कुचेष्टा से धनोपार्जन करना चाहते हैं. उनकी स्थिति व्याडी और इन्द्रदत्त जैसी ही होती है.

●●●